इस मास में विशेष: साधना दीक्षा

कुण्डलिनी षटचक्र जागरण साधना

29 जून, देवशयनी एकादशी

कुण्डलिनी जागरण ही समस्त **सिद्धियों का सार** है। **मूलाधार** से लगाकर **सहस्त्रार** तक एक-एक कर चक्र जब जाग्रत होते हैं, तो साधक को अनेकों **दिव्यानुभूतियां** होती है। सामने वाले व्यक्ति के मन की बातें जान लेना, दूर कहीं घट रही घटना को बैठे-बैठे देख लेना, **अदृश्य शक्तियों** से **वार्तालाप करना** और **मानसिक तरंगों** द्वारा दूरस्थ बैठे व्यक्ति से **सम्पर्क करना**- ऐसी अनेकों **अतीन्द्रीय शक्तियों** का प्रादुर्भाव **कुण्डलिनी के चक्रों के जागरण** से होता है।

गुरू आत्म वार्तालाप प्रयोग

03 जुलाई, सद्गुरूदेव महाप्रयाण दिवस

इस साधना को सम्पन्न करने पर **साधक** को **ध्यानावस्था** में **पूज्य सद्गुरूदेव जी** से मानसिक रूप से वार्तालाप होने की स्थिति निर्मित होती है। साधक अपने प्रश्नों को गुरूदेव के समक्ष रखकर उनका निदान पा सकता है। कई बार संकट आने के पूर्व ही इस साधना से सम्पन्न साधक को सद्गुरूदेव आभास करा देते हैं और **संकट की घड़ी** के पूर्व ही उससे बचने का प्रावधान भी कर देते हैं। ऐसे **विशिष्ट पर्व** पर इस साधना के माध्यम से साधक सद्गुरूदेव जी से वार्तालाप कर अपने **जीवन की न्यूनताओं** को समाप्त कर **पूर्णता** प्राप्त कर सकता है।

रोग मुक्तिदायक रूद्र प्रयोग

17 जुलाई, हरियाली अमावस्या

किसी भी रोग का होना **दुर्भाग्य** का सूचक है, यह दुर्भाग्य कभी भी व्यक्ति पर प्रभावी हो सकता है। रोग इस जन्मों के संस्कारों के फलस्वरूप भी हो सकता है और पिछले जन्मों के **दुष्कर्मों** के फलस्वरूप भी। यह प्रयोग सम्पन्न कर व्यक्ति अपने जीवन से रोगों को दूर कर चिर **स्वस्थ** बना रह सकता। **भगवान शिव** की इस साधना के फलस्वरूप साधक को **अरोग्यता** के साथ **शतायु जीवन** की **प्राप्ति** होती है।

साधना एक **साधक** के जीवन का **अभिन्न अंग** है, जो साधक समय-समय पर स्वयं व सामूहिक रूप से साधना सम्पन्न करते हैं, वे सदैव **सद्गुरूदेव** के **हृदय** में एक **विशिष्ट स्थान** प्राप्त करते हैं। ये **विशिष्ट साधनायें** सम्पन्न करने के लिए **कैलाश सिद्धाश्रम** में सम्पर्क करें।